कुमार जीवन - 20

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **कुमारों को सदा यह स्मृति रहे कि हम कुमार नहीं लेकिन ब्रह्माकुमार हैं, रुहानी सेवाधारी हैं। सेवाधारी अर्थात् स्वयं सम्पन्न स्वरुप होकर औरों को देने वाले।** तो सदा अपने को सर्व खजानों से सम्पन्न अनुभव करते हो? सेवाधारी समझ कर सेवा करेंगे तो सफलतामूर्त होंगे। **सेवा की विशेषता ही है सदा नम्रचित। निमित्त और नम्रचित यह दोनों विशेषताएं सेवा में सफलता स्वरुप बनाती हैं।** कुमार सेवा के क्षेत्र में आगे बढ़ने वाले होते हैं। लेकिन आगे बढ़ते हुए निमित्त और नम्रचित की विशेषता नहीं होगी तो सेवा करेंगे, मेहनत करेंगे सफलता कम दिखाई देगी।

➳ _ ➳ तो कुमार सेवा में तो होशियार हो ना? सभी प्लैनिंग बुद्धि हो। जैसे सेवा की भाग दौड़ में होशियार हो वैसे इन दो विशेषताओं में भी होशियार बनो। **विशेषताओं सहित विशेष सेवाधारी बनो। नहीं तो टैम्प्रेरी टाइम की सफलता तो होगी लेकिन चलते-चलते थोड़े टाइम के बाद कनफ्युजड हो जायेंगे। यह क्या हुआ, यह क्यों हुआ, यह दीवार आ जायेगी।** तो सदा यह दो बातें स्मृति में रखना। इससे सर्विस में फास्ट और फर्स्ट हो जायेंगे। **कुमारों को सेवा तो करनी है लेकिन मर्यादाओं की लकीर के अन्दर रहकर करनी है फिर देखो सफलता हुई पड़ी है।**

➳ _ ➳ कुमारों को सब प्रकार के चांस हैं, सेवा करने में भी चांस, पुरुषार्थ में आगे जाने का भी चांस और साथ-साथ अपने परिवार को आगे बढ़ाने का चांस है। **कुमार जीवन लक्की जीवन है। कुमार अर्थात् सदा स्वतन्त्र। किसी भी प्रकार के बंधन के वश नहीं। ऐसे स्वतन्त्र अनुभव करते हो ना?**

➳ _ ➳ **स्वयं के व्यर्थ संकल्प भी एक बंधन है, यह बंधन भी उड़ती कला से नीचे ले आते हैं। तो निर्बन्धन कुमार। व्यर्थ संकल्प भी समाप्त। निर्बन्धन आत्मा ही तीव्रगति में जा सकती है। बापदादा को कुमारों के ऊपर नाज़ है कि कुमार अपने जीवन को कितना श्रेष्ठ बना रहे हैं। सदा इसी स्मृति में रहो कि हमारे जैसा भाग्यवान कोई नहीं।**

➳ _ ➳ कुमारों का अपना भाग्य, कुमारियों का अपना। कुमारियाँ स्वतन्त्र होकर सेवा नहीं कर सकती। कुमार तो कहां भी अकेले जाकर सेवा कर सकते हैं। कुमारों को क्या बंधन है। कुमारियाँ तो फिर भी आजकल की दुनियां के हिसाब से बंधन में हैं, कुमार तो आलराउन्ड सेवा कर सकते हैं।

➳ _ ➳ कुमार हैं डबल लाइट। किसी भी प्रकार का बोझ नहीं। न संकल्पों का बोझ, न संबंध सम्पर्क का बोझ। कुमार हैं ही निर्बन्धन, क्योंकि नालेजफुल हो गये। नालेजफुल व्यर्थ की तरफ कभी भी जा नहीं सकते। व्यर्थ संकल्प भी नालेजफुल के आगे आ नहीं सकता। संकल्प में भी शक्तिवान, कर्म में भी शक्तिवान। मास्टर सर्वशक्तिवान हो। तो सदा ऐसे अनुभव करते हो कि हम मास्टर सर्वशक्तिवान हैं? क्योंकि कुमारों के पीछे माया चक्र बहुत लगाती है। माया को भी कुमार कुमारियाँ अच्छे लगते हैं। जैसे बाप को बहुत प्रिय हो, ऐसे माया को भी प्रिय हो। इसलिए माया से सावधान रहना। **सदा अपने को कम्बाइन्ड सम-झना, अकेला नहीं, युगल साथ है।** सदा कम्बाइन्ड समझेंगे तो माया आ नहीं सकती। **(18-11-1981)**

➢➢ सेवा में अहंकार

➳ _ ➳ सबके सर पर पाँव रखकर आगे बढना चाहता है

➳ _ ➳ सबके मुख पर अपने नाम को नाचता हुआ देखना चाहता है

➳ _ ➳ "मेरी सेवा कोई दूसरा करे" - यह उसे स्वीकार नहीं

➳ _ ➳ दिखावे से भरपूर

➳ _ ➳ चापलूसी उसे पसंद

➳ _ ➳ बाबा को प्रतक्ष्य करने से ज्यादा स्वयं को प्रतक्ष्य करने पर जोर

→ गुप्त रहना उसे पसंद नहीं

➳ _ ➳ मेरा नाम, मेरा मान, मेरा शान

→ जब यह कामनाएं पूरी नहीं होती तो फिर

■ सेवाओं में टकराव उत्पन्न होता है... क्रोध उत्पन्न होता है

➢➢ सेवाओं में मार्क्स जमा करना ....

➢➢ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ सेवाओं में चाहे कितनी भी भाग दौड़ करो

→ परन्तु यदि **निमित भव, निर्मल वाणी, निर्माणचित** नहीं है तो

■ केवल 5% ही जमा होगा

➳ _ ➳ तुम जितना समझते हो... बापदादा के पास तुम्हारा जितना जमा है

→ उतना जमा नहीं है

■ जैसे :- लोकिक में भी Exam देकर आने पर हमें लगता है की हमारा Exam बहुत अच्छा हुआ

▶ लेकिन मार्क्स उसके बिलकुल ही उल्टा आते हैं

→ क्योंकि जहां तुम्हारे मार्क्स जमा हो रहे हैं... सिर्फ वही देखते हो

■ जहां मार्क्स Cut हो रहे हैं... उसे नहीं देखते हो

➳ _ ➳ श्रीमत से Compromise कर की गयी सेवा की -ve marking होगी

→ जिसकी धारानाये नहीं है, उसे बाबा मिलन में नहीं लाना है

■ यथार्थ रहमदिल बनना है / **ज्ञानयुक्त रहमदिल बनना है**

▶ नियम और मर्यादाओं को तोड़कर रहमदिल नहीं बनना है... चाहे किसी का दिल टूट जाए....

➳ _ ➳ देहधारियों को खुश करने के लिए की गई सेवा के मार्क्स जमा नहीं होंगे

➢➢ स्वयं प्रिय, प्रभु प्रिय, लोक प्रिय कैसे बनें ?

➳ _ ➳ स्वयं प्रिय

→ मर्यादाओं की लकीर के अन्दर रहना

➳ _ ➳ प्रभु प्रिय

→ सच्चा और साफ़ दिल

➳ _ ➳ लोक प्रिय

→ सम्मान दो... सम्मान लो